सर्व विभावसे उदासीन और अत्यंत शुद्ध निज पर्यायका सहजरूपसे आत्मा सेवन करे, उसे श्री जिनेंद्रने तीव्रज्ञानदशा कही है। जिस दशाके आये बिना कोई भी जीव बंधनमुक्त नहीं होता, ऐसा सिद्धांत श्री जिनेंद्रने प्रतिपादित किया है, जो अखंड सत्य है।

किसी ही जीवसे इस गहन दशाका विचार हो सकना योग्य है, क्योंकि अनादिसे अत्यंत अज्ञानदशासे इस जीवने जो प्रवृत्ति की है, उस प्रवृत्तिको एकदम असत्य, असार समझकर उसकी निवृत्ति सूझे ऐसा होना बहुत कठिन है; इसलिये जिनेंद्रने ज्ञानीपुरुषका आश्रय करनेरूप भक्तिमार्गका निरूपण किया है, कि जिस मार्गके आराधनसे सुलभतासे ज्ञानदशा उत्पन्न होती है।

ज्ञानीपुरुषके चरणमें मनको स्थापित किये बिना यह भक्तिमार्ग सिद्ध नहीं होता, जिससे जिनागममें पुनः पुनः ज्ञानीकी आज्ञाका आराधन करनेका स्थान स्थानपर कथन किया है। ज्ञानीपुरुषके चरणमें मनका स्थापित होना पहिले तो कठिन पड़ता है, परंतु वचनकी अपूर्वतासे, उस वचनका विचार करनेसे तथा ज्ञानीको अपूर्व दृष्टिसे देखनेसे मनका स्थापित होना सुलभ होता है।

ज्ञानीपुरुषके आश्रयमें विरोध करनेवाले पंच विषयादि दोष हैं। उन दोषोंके होनेके साधनोंसे

यथाशक्ति दूर रहना, और प्राप्तसाधनमें भी उदासीनता रखना, अथवा उन उन साधनोंमेंसे अहंबुद्धिको दूरकर, उन्हें रोगरूप समझकर प्रवृत्ति करना योग्य है। अनादि दोषका ऐसे प्रसंगमें विशेष उदय होता है। क्योंकि आत्मा उस दोषको नष्ट करनेके लिये अपने सन्मुख लाता है कि वह स्वरूपांतर करके उसे आकर्षित करता है, और जागृतिमें शिथिल करके अपनेमें एकाग्र बुद्धि करा देता है। वह एकाग्र बुद्धि इस प्रकारकी होती है कि 'मुझे इस प्रवृत्तिसे वैसी विशेष बाधा नहीं होगी, मैं अनुक्रमसे उसे छोड़ूँगा, और करते हुए जागृत रहूँगा', इत्यादि भ्रांतदशा उन दोषोंसे होती है; जिससे जीव उन दोषोंका संबंध नहीं छोड़ता, अथवा वे दोष बढ़ते हैं, उसका ध्यान उसे नहीं आ सकता।

इस विरोधी साधनका दो प्रकारसे त्याग हो सकता है—एक, उस साधनके प्रसंगकी निवृत्ति, दूसरा, विचारपूर्वक उसकी तुच्छता समझना।

विचारपूर्वक तुच्छता समझनेके लिये प्रथम उस पंचविषयादिके साधनकी निवृत्ति करना अधिक योग्य है, क्योंकि उससे विचारका अवकाश प्राप्त होता है।

उस पंचविषयादिके साधनकी सर्वथा निवृत्ति करनेके लिये जीवका बल न चलता हो, तब क्रम-क्रमसे, अंश-अंशसे उसका त्याग करना योग्य है; परिग्रह तथा भोगोपभोगके पदार्थोंका अल्प परिचय करना योग्य है। ऐसा करनेसे अनुक्रमसे वह दोष मंद पड़ता है और आश्रयभक्ति दृढ होती है तथा ज्ञानीके वचन आत्मामें परिणमित होकर, तीव्रज्ञानदशा प्रगट होकर जीवन्मुक्त हो जाता है।

जीव क्वचित् ऐसी बातका विचार करे, इससे अनादि अभ्यासका बल घटना कठिन है परंतु दिन-प्रतिदिन, प्रसंग-प्रसंगमें और प्रवृत्ति-प्रवृत्तिमें पुनः पुनः विचार करे, तो अनादि अभ्यासका बल घटकर अपूर्व अभ्यासकी सिद्धि होकर सुलभ ऐसा आश्रयभक्तिमार्ग सिद्ध होता है। यही विनती।

आ० स्व० प्रणाम।